MODEL ANS. KEY

❖ **निम्न प्रश्नों का उत्तर 15-15 शब्दों में दें।**

1. निष्काम कर्मयोग की अवधारणा क्या हैं?

उत्तर— फलाकांक्षा से रहित होकर अपने लिए नियम कर्त्तव्यों का समुचित रूप से पालन करना ही निष्काम है।
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्।
मा कर्मफल हेतुर्भूर्माते संगोऽस्त्व कर्मणि।।

2. गीता में स्थितप्रज्ञ कौन कहलाता है?

उत्तर— वह ज्ञानी जिसकी प्रज्ञा संयमित एवम् स्थिर हो गई है और जो नाना प्रकार की वासनाओं, सुख—दुःख, लाभ—हानि, जय—पराजय में सदैव समान भाव रखता है।

3. किस प्रकार गीता में प्रवृत्ति व निवृत्ति में सामंजस्य स्थापित हुआ है?

उत्तर— व्यक्ति को निष्ठापूर्वक अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए (प्रवृत्ति) तथा फलासक्ति से विरक्त रहना चाहिए (निवृत्ति)।

4. गीता में स्वधर्म क्या है?

उत्तर— गीता में वर्णित गुणों व कर्मों पर आधृत वर्णाश्रम के अनुसार अपने लिए नियत कर्त्तव्यों का समुचित रूप से पालन करना, स्वधर्म है।

5. सामान्य व विशेष धर्म में अन्तर बताइए।

उत्तर— जो सभी पर समान रूप से लागू हो वह सामान्य धर्म है और वर्णाश्रम के अनुसार नियत विशेष धर्म, स्वधर्म है।

❖ **निम्न प्रश्नों का उत्तर 50-50 शब्दों में दें।**

6. गीता के कर्मयोग का विश्लेषण करें।

उत्तर— 1. मनुष्य को सदैव वर्णगत कर्त्तव्य करने चाहिए।
2. कर्त्तव्य करने के समय कर्त्तव्य को छोड़कर अन्य विचार मन में नहीं आना चाहिए।
3. चूँकि साधारण मनुष्य फलाकांक्षा से कर्म करता है, अतः चतुर व्यक्ति को फलासक्ति से रहित कर्म करना चाहिए। निष्काम कर्म करना।

7. गीता में तीनों योग को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— भक्ति योगः— ईश्वर के प्रति निष्काम या निर्हेतुक भावना से प्रेम करना।
कर्म योगः— कर्तृत्वाभिमान से रहित होकर अनासक्ति भाव से कर्म करना, कर्मयोग है।
ज्ञान योगः— कर्तृत्वाभिमान से रहित तथा निष्काम भाव से अवस्थित होने पर आत्मा का अपने स्वरूप में अवस्थित होना ज्ञान योग है।

❖ **निम्न प्रश्नों का उत्तर 100 शब्दों में दें।**

8. निष्काम कर्मयोग की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए बताइए कि यह किस प्रकार प्रवृत्ति व निवृत्ति में सामंजस्य स्थापित करती है?

उत्तर— *सर के क्लास के माध्यम से*